ओशो-पत्र

स्वर्ण नियम–
एक बार में एक कदम

प्रिय,
कृष्ण कबीर,
प्रेम!

सदैव स्वर्ण नियम स्मरण रखो—एक बार में एक कदम।

एक कृपालु औरत से अक्सर ही आवारा भिखमंगे भोजन मांग कर ले जाते थे। आखिर उसने निश्चिय किया कि अब से वह मना कर देगी, क्योंकि वह दिन पर दिन भारी पड़ता जा रहा था। परंतु उसके निर्णय के थोड़ी देर बाद ही एक युवा पुरुष अंदर आया और उसने एक धागे का टुकड़ा मांगा। उसने देखा कि उसकी पतलून बुरी तरह से फट गई थी उसके पास सुई थी और उसने महसूस किया कि अभी उसे उसकी पतलून की ऐसी हालत में भी काम मिल सकता है, इसलिए उसने उसे धागा दे दिया। उस आदमी ने धागा लिया और सड़क के पार पेड़ के नीचे जाकर कुछ मिनट के लिए बैठ गया, तब फिर लौट कर आया। उसने आकर उस औरत से कहा कि वह पतलून ठीक नहीं कर सकता जब तक कि उसके पास कपड़े का टुकड़ा पैबंद लगाने के लिए नहीं हो। उस औरत ने उसे एक कपड़े का टुकड़ा दे दिया।

करीब एक घंटे बाद वह युवक फिर घर में लौट कर आया और कहा—श्रीमतीजी, यह पतलून तो सुधारने-योग्य न रही, आपकी बहुत कृपा होगी यदि आप अपने पति की कोई पुरानी पतलून मुझे दे दें। उस स्त्री ने एक पुरानी पतलून उसे दे दी और उसकी बुद्धिमता पर मुस्कुराई।

वह युवक खलियान के पीछे गया और उसने पतलून बदल ली। तब फिर वह उस घर पर लौटकर आया और कहने लगा कि पतलून कमर के पास कुछ ढीली है। यदि उसे कुछ खाने को मिल जाए तो अवश्य ही वह पतलून फिट आ जाएगी।

इस बार वह स्त्री खिलखिलाकर जोर से हंसी और उसको डटकर खाना खिलाया। और, यह सब इसलिए हुआ कि उसने एक बार में एक कदम ही उठाया।

—ओशो
मौन संगीत